मानवाधिकार का सार

मानव हूँ, मैं मानव हूँ
कहना नहीं बताना है।।
मन से, कर्म-वचन से
हमको मानव धर्म निभाना है।।

हो कृत्य मानवी, कर्म मानवी,
ध्येय मानवी, धर्म मानवी,
पंथ मानवी, लक्ष्य मानवी,
जीवन का उद्देश्य मानवी,

अनदेखी से मानवता की,
बढ़ जाती ईश्वर से दूरी।
मानवता की राह चले सब,
कर लें जीवन यात्रा पूरी।।

जो मानव को मानव समझे
देव स्वयं बन जाता है।
सही अर्थ में वो ही मानव
मानव धर्म निभाता है।।

हुआ हनन गर मानव हित का,
आयोग कदम उठाएगा।
करने को अधिकार सुरक्षित,
अपनी कलम चलाएगा।।

जाति-धर्म का भेद नहीं है,
सम होगा सबसे व्यवहार।
मानव अधिकारों की रक्षा,
ध्येय यही है, यही विचार।।

बहु जन हिताय ,बहुजन सुखाय
ये मूल मंत्र अपना हथियार।।

✍

गोपाल कृष्ण व्यास
अध्यक्ष राज्य मानवाधिकार आयोग
जयपुर